ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण। ऋग्वेद 1/57/5
हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।
O the Bounteous Lord ! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 38, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 अगस्त, 2015 से रविवार 23 अगस्त, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

बड़ी संख्या में रही युवाओं की भागीदारी

बुजुर्गों ने बड़े उत्साह के साथ किया ध्वजा रोहण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अमर शहीद करतार सिंह सराभा शताब्दी वर्ष पर उनकी याद में यज्ञ एवं देश भक्ति गीत संध्या संपन्न

शहीद तो बहुत हुए आजादी की जंग में लेकिन न जाने कितने ऐसे शहीद हैं जिन्हें न तो सरकार याद करती है न ही कोई सामाजिक संस्था। अमर शहीद करतार सिंह सराभा भारत की आजादी का वह शूरवीर जिसने अंग्रेजी सरकार को यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि ऐसे लाल सिर्फ भारत की मिट्टी में ही पैदा हो सकते हैं। पर अफसोस आज की राजनीति ने इन देशभक्तों को भुला दिया। राजनेता भले ही इन वीरों की कुर्बानी भूल गये हों पर आर्य समाज कभी नहीं भुला पाया इन शहीदों की कुर्बानी को। आर्य समाज इन वीरों के बलिदान के किस्से कभी दफन नहीं होने देगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश के 69 वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अमर शहीद करतार सिंह सराभा को याद करते हुए डी. सी. एम. रेलवे कालोनी के आर्य समाज मन्दिर में शहीद करतार सिंह सराभा की स्मृति में 14 अगस्त 2015 को उनके शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं देशभक्ति गीत संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें, दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों, आर्य महिला समाज, आर्य वीरदल, आर्य वीरांगनाओं, ऋषि- मुनियों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, बच्चों एवं दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। समारोह का शुभारम्भ आचार्य जय प्रकाश शास्त्री द्वारा बड़ी श्रद्धा से वैदिक यज्ञ के साथ हुआ। पूर्णाहुति के उपरान्त 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गो जिसमें माताएं भी शामिल थीं ने संयुक्त रूप से राष्ट्रीय ध्वजारोहण कर झंडे को प्रणाम किया। साथ ही संयुक्त रूप से सभी उपस्थित जन समूह ने राष्ट्र गान गाया। राष्ट्रगान के उपरान्त पूर्ण निष्ठा व श्रद्धाभाव से अमर शहीदों को याद करते हुए राष्ट्रीय गीतों का सिलसिला युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य ने प्रारम्भ किया। कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उपस्थित जन समूह में सर्वाधिक संख्या युवाओं की थी और वीर रस के गीतों को स्वरों की माला में पिरोने का कार्य भी युवाओं ने बखूबी निभाया। जहां युवाओं में अथाह उत्साह था वहीं बच्चों में भी देश के प्रति जोश व उमंग नजर आयी।

...शेष पेज 5 पर

सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी राह बदल दी- कैलाश खेर

वॉलीवुड के जाने-माने गायक कैलाश खेर जोकि सूफियाना मिजाज के गीतों से जाने जाते हैं ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे जीवन में पुस्तकों का बहुत अहम योगदान रहा है।

लेकिन 'सत्यार्थ प्रकाश' मेरे जीवन की वह पहली पुस्तक है जिसका मुझ पर पूरी जिन्दगी के लिए प्रभाव रहेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी गयी इस किताब में मुझे नचिकेता और यमाचार्य की कहानी ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया। सभी जानते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जाने-माने समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। इस किताब को मेरे पिताजी पढ़ते थे और उन्हीं के जरिये मैंने इसे पढ़ा।

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की धर्मपत्नी

श्रीमती शुभ्रा मुखर्जी का निधन

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की धर्म पत्नी श्रीमती शुभ्रा मुखर्जी का दिनांक 18 अगस्त 2015 को दिल की बीमारी के चलते दिल्ली में निधन हो गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

हीरो साईकिल चेयरमैन ओम प्रकाश मुंजाल दिवंगत

श्री ओम प्रकाश मुंजाल जी का जन्म 26 अगस्त 1928 पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के एक साधारण से परिवार में हुआ। आपका परिवार विशुद्ध वैदिक संस्कारों से प्रेरित था। उस समय बच्चों को गांव कमालिया (अब पाकिस्तान) के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजा जाता था। यही वह स्थान था जहां माता-पिता द्वारा दिये गये संस्कार बच्चों के अन्दर पल्लवित होते थे। वैसे उस समय शिक्षा के लिए अपने बच्चों को किसी गुरुकुल में भेजना बड़ी बात होती थी।

आर्य समाज को इस बात पर अत्यन्त गर्व है कि दिल्ली से प्रारम्भ किए गये कारोबार(हीरो साईकल) को विश्व की बुलन्दियों तक पहुंचाने आपका बहुत बड़ा योगदान रहा। सिर्फ इतना ही नहीं आपके परिवार ने एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया जो अपने आप में अतुलनीय है। आज जहां हम स्वदेशी की बात करते हैं वहां पर आपने स्वदेशी का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आपका व्यवसाय ऐसा प्रथम भारतीय व्यवसाय समूह बना जिसने जापान से प्राप्त तकनीक को छोड़कर इसे पूर्ण रूप से स्वदेशी व्यवसाय बनाया।

13 अगस्त 2015 को आपने इस मृत्युलोक से पलायन कर सम्पूर्ण आर्य जगत को शोकाकुल कर दिया। आपके निधन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित हैं।

स्वाध्याय

प्रभु भक्त को कौन मार सकता है?

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे। प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः।। -ऋ. 1।91।6
ऋषिः -राहूगणो गोतमः।। देवता -सोमः।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ - सोम - हे सोम! त्वं च - तुम यदि नः - हमारे जीवातुम् - जीवित रहने की वशः - इच्छा करते हो तो न मरामहे - हम मर नहीं सकते। प्रियस्तोत्र - तुम प्रिय स्तोत्रवाले हो और वनस्पतिः - संभजन करने वालों के रक्षक हो।

विनय - हे हृदयेश! हे देव! हे सोम! जब तुम्हारी इच्छा हमें जीवित रखने की है तब हमें कोई मार नहीं सकता। यह अन्धा, अज्ञानी संसार बहुत बार तेरे भक्तों से द्वेष करने लगता है, उन्हें सताता है और उन्हें मारना तक चाहता है। भक्त प्रह्लाद को मारने की कितनी चेष्टाएं की गई। भक्त मीरा की जान लेने के लिए राजा ने कई बार यत्न किया। भक्त दयानन्द को लोगों ने कई बार विष दिया, परन्तु तेरी इच्छा बिना कौन मर सकता है। भक्त लोग इस तत्त्व को जानते होते हैं, अतः वे आनन्दित रहते हैं। मरने से डरने वाला यह संसार-तेरे ईश्वरत्व को न जानने वाला यह संसार-यूंही भय-त्रास और मरणाशंका से मरा जाता है, परन्तु भक्त देखते हैं कि जब तक तेरी इच्छा नहीं है तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता। और जब तेरी इच्छा होगी तब तो मरना भी उनके लिए उतना ही आनन्ददायक होगा जितना कि तेरी इच्छा से जीना आनन्ददायक है। अहो, इस ज्ञान के कारण वे भक्त जीवित ही अमर हो जाते है।, अभिनिवेश के क्लेश से पार हो जाते हैं। वे संसार की किसी भयंकर से भयंकर वस्तु से भी न डरते हुए, तेरे स्तोत्र गाते हुए निर्भय फिरते हैं। प्यारे स्तोत्रों से तुझे रिझाना या तेरे स्तुतिगान से जगत् में भक्ति का प्रसार करना, यही उनका कार्य होता है। अपनी रक्षा व अरक्षा की चिन्ता वे तुझ पर छोड़ निश्चिन्त हो जाते हैं। तू तो सम्भजन करने वालों की रक्षा करने वाला विद्यमान है ही, तो उन्हें क्या चिन्ता? अहा! कैसी निश्चिन्तता और निरापदता की अवस्था है! अमृत्युता (अमरता) का कैसा आनन्द है!

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

ऊँच-नीच की पद्दलित मानसिकता!

अभी एक-दो दिन पीछे ही हमने आजादी की 68वीं वर्षगांठ मनाई। हम सबने आजादी के गीत हृदय से गाये और मन ही मन यह सोच रहे थे कि किस तरह हमारे शहीद भाइयों ने हमें आजादी दिलाई थी। क्या दीवानगी थी उस समय के लोगों के दिमाग में कि आजादी के लिए लोग हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल जाते थे। आज 125 करोड़ भारतीयों के लिये अत्यंत ही, उमंग का दिन था। देश के प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने लाल किले की प्राचीर से जातीय, नस्लीय भेद-भाव पर समाज के मन को झकझोरा। पर इस पावन पर्व पर भी मेरे मन में यह प्रश्न घर किये बैठा था कि आखिर देश में जातिवाद, ऊंच-नीच का भेद-भाव क्यों? चलो हम मानते हैं कि समाज को राजनैतिक आजादी तो मिल गयी पर जातिवाद की मानसिक गुलामी से आजादी पाने के लिये कौन सी क्रान्ति करनी पड़ेगी? छुआछूत, अस्पृष्यता, छोटी-जाति, बड़ी, जाति ये सब अभिशाप तो इस समाज में अभी भी ज्यों के त्यों खड़े हैं और ये अभिशाप जब तक इस देश के अन्दर हैं तब तक देश का पतन होता रहेगा।

इतिहास कहता है कि वैदिक युग की समाप्ति के बाद समाज में जातिवाद का ज़हर बड़ी तेजी से फैला। समाज शास्त्री इस बात को तो मानते हैं कि वैदिक युग में जातिवाद जैसी कुप्रथा नहीं थी पर प्रश्न यह है कि जब लोगों को इस बात का पता है तो अब वैदिक युग अपनाने में परेशानी क्या है? हमने सरकारों में हमेशा जातीय भेद-भाव खत्म करने की बस हुंकार सुनी है, किसी भी सरकार में इस सम्बन्ध में इच्छा शक्ति नहीं देखी, यदि होती तो नयी-नयी जातीय योजनाओं का शुभारम्भ नहीं होता।

अभी हरियाणा के हिसार जिले के भगाना गांव के दलित समाज के कुछ परिवारों के सामाजिक बहिष्कार के कारण सामूहिक रुप से धर्म परिवर्तन की बात सामने आई। दूसरी घटना मथुरा नौहझील क्षेत्र के पारसौली गांव में वहां पर दलित समुदाय का कुछ लोगों ने सामाजिक तिरस्कार किया। इन घटनाओं ने हमारे पढ़े-लिखे समाज की मानसिकता पर एक बड़ा प्रश्न चिंह्न खड़ा कर दिया कि ये जाति प्रथा के झूठे आइने में खुद को कितना बड़ा क्यों न समझते हों। इस तरह के कुकृत्यों पर मैं ऊंच-नीच का भेदभाव मानने वालों की मानसिकता को दलित, शोषित, पिछड़ी मानसिकता कह सकता हूं। देश भले ही प्रगति की ऊंचाइयों को छूने की कोशिश में हो पर हम अब भी जातिवाद जैसी मानसिक गुलामी के गड्ढे में पड़े हैं। आखिर उन 100 परिवारों का दोष क्या है, सिर्फ इतना कि सामाजिक बंटवारे के आधार में वे दलित जाति से हैं, बस? पर हमने तो हिन्दू धर्म के ठेकेदारों को उन लोगों से भी गले मिलते देखा है जिन्होंने इस देश की धर्म संस्कृति की स्त्रियों के चीर चरित्र को हजारों सालों तक रौंदा और यह जो हजारों सालों तक जातिगत रूप से खुद को ऊंची जाति से समझने वाले लोगों के पैरों तले पद दलित होकर भी इनके साथ धर्म युद्ध में डटे रहे। आज इनसे घृणा करते हैं, इनकी अवहेलना, इनका सामाजिक तिरस्कार-बहिष्कार करते हैं और फिर धर्म परिवर्तन का शोर मचाते हैं। जब तुम उन लोंगों को गले लगा सकते हो तो फिर इन अपनो को क्यों नहीं? इनसे कैसी नफरत? मैं देश की सरकारों से एक बात पूछना चाहता हूँ जो पददलित समाज शताब्दियों तक जातिवादी अन्याय अपमान के साथ अपने ही भूभाग पर प्रताड़ित हो रही हो क्या अब उसे सम्मान पूर्वक जीने का हक नहीं है, अब उसे गले लगाये जाने की जरूरत नहीं है ? नहीं तो धर्मपरिवर्तन पर रोना चिल्लाना छोड़ दो। कहते हैं पांच हजार लीटर की पानी की टंकी भी छोटे-छोटे छिद्रों से रिक्त हो जाती है और इस हिन्दू समाज में तो अंसख्य जातिवादी छेद हैं। यदि छेद नहीं भरे गये तो धर्म और देश खोखला हो जायेगा। आर्य समाज हमेशा से ये जातिवाद जैसी कुप्रथाओं का खण्डन मण्डन करता आया है। यही कारण था कि पंडित मदन मोहन मालवीय जी को यह कहने को विवश होना पड़ा था। कि जिस दिन आर्य समाज सो जायेगा उस दिन हिन्दू धर्म का पतन हो जायेगा। जाति एक भ्रम है, यह एक दम्भ है, यह मानसिक दासता है, यह एक मिथक है, अंधविश्वास है, अभी भी समय है इस जाति शब्द को चेतना बनाकर हृदय से लगा लो ताकि यह भौतिक शक्ति बनकर देश धर्म दोनों को एक नई ऊंचाई पर पहुंचा सके। जातीय भेद-भाव किसी भी समाज के माथे पर कलंक होता है और यदि अब भी यह घटना होती है तो मैं समझता हूँ कि यह देश-धर्म के लिए खतरनाक साबित होगा। ***-सम्पादक***

बोध कथा

सत्संग के एक वाक्य ने जीवन बदल दिया

महर्षि दयानन्द जिन दिनों जेहलम में थे, उन दिनों वहां महता अर्मीचन्द जी बहुत सुन्दर भजन गाया करते थे, परन्तु वे थे शराबी और उनका आचार भी कुछ बिगड़ चुका था। नित्य स्वामी जी के पास आते। एक दिन महता अर्मीचन्द ने प्रभु भक्ति का बहुत ही मनोहर गान गाया। स्वामी जी ने सुना तो कहा - 'अर्मीचन्द! हो तो हीरे, परन्तु कीचड़ में पड़े हो।'

बस, तीर चल गया, निशाना ठीक बैठ गया था। उसी समय से महता अर्मीचन्द का जीवन पलट गया। मदिरा छोड़ दी, व्यभिचार को महापाप समझने लगे और महता अर्मीचन्द सचमुच ईश्वर के सच्चे भक्त बन गए। महर्षि के एक वाक्य ने एक शराबी व्यभिचारी को भक्त और शुद्धाचारी बना दिया।

इसलिए मैं कहता हूं कि सत्संग से उकताइये नहीं। निरन्तर प्रयत्नशील रहा करिये। प्रतीक्षा कीजिये कि कब आपके भाग्योदय की घड़ी आती है।

कबीर संगति साधु की, नितप्रति कीजे जाय।
दुरगति दर बहावसी, देसी सुगति बताय।।

प्रेरक प्रसंग

संन्यास की मर्यादा

स्वामी स्वतंत्रानन्दजी महाराज के जीवन की एक प्रेरणाप्रद घटना है। आप एक बार अजमेर गये। प्रो. घीसूलालजी के साथ किसी सामाजिक कार्य के लिए कहीं जा रहे थे। होली के दिन थे। बाजार में शरारती मूर्ख लोगों ने साधु पर रंग डाल दिया।

आप एकदम रुक गये। प्रो. घीसूलालजी से कहा, ''अब वापस चलिए। वस्त्र बदलेंगे। इस पर धब्बे पड़ गये हैं। मैं तो संन्यासी वेश में ही चल सकता हूं। साधु पर दाग ठीक नहीं।''

श्री महाराज लौट गये। जहां ठहरे थे वहीं पहुंचे। उनके पास और वस्त्र थे ही नहीं। कौपीन लगाकर बैठ गये। आर्य पुरुषों ने उनका कुर्ता सिलाया। धोती ली। गेरु रंग करवाया। उन्हें पहना और कार्य पर बाहर निकले। जब तक बिना दाग के भगवे वस्त्र तैयार न हुए वे कौपीन धारण कर अपने पठन-पाठन में लगे रहे, मिलने वाले आर्य पुरुषों से बातचीत करते रहे। आर्य साधुओं, महात्माओं व नेताओं ने ऐसी मर्यादाएं स्थापित की हैं और ऐसे इतिहास बनाये हैं। **साभार-तड़पवाले**

गोकुल धाम गौ सेवा महातीर्थ

गोकुल धाम (गौ-चिकित्सालय) जोकि एम्बुलेंसों के माध्यम से हरियाणा, यू.पी. राजस्थान एवं दिल्ली से 200 किमी. की दूरी तक बेसहारा, दुर्घटनाग्रस्त, पीड़ाग्रस्त गोवंश को लाकर उनकी सेवा सुश्रूषा में समर्पित है। गोकुल धाम के संचालक श्री सुनील निमाणा जी के अथक प्रयासों एवं गौ माता के आशीर्वाद से यह स्थान आज जन-जन की आस्था का केन्द्र बन गया है।

यदि आपको कहीं भी कभी भी कोई गौवंश बेसहारा, दुर्घटनाग्रस्त, पीड़ाग्रस्त दिखाई दे तो एम्बुलेंस के लिए सम्पर्क करें- 08816809191,
दान पात्र के लिए सम्पर्क करें -08398961900

आर्य सन्देश यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके। **-सम्पादक**

वेद प्रचार से ही होगा राष्ट्र का विकास

जिस प्रकार मनुष्य का शरीर, प्राण और आत्मा हैं, अलंकार के रूप में राष्ट्र का भी शरीर उसके प्राण और आत्मा हैं। यह बात सही है कि मनुष्यों से समाजें बनती हैं और समाजों से राष्ट्र तथा राष्ट्रों से संसार बनता है। हमारा विषय राष्ट्र का विकास है। राष्ट्र के शरीर, प्राण और आत्मा का विकास होना चाहिए।

राष्ट्र की आत्मा का विकास यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसमें असली मर्म की बातें हैं इसे सब देशवासियों को ध्यान से समझ कर विचार करना चाहिए। इसको हम आपके सामने ऋषि-महर्षियों का प्रमाण देकर लिख रहे हैं। राष्ट्र की आत्मा है वेद का आध्यामिक और भौतिक ज्ञान का ठीक ढंग से मिश्रण करके उसके अनुसार चलना। प्रमाण नीचे लिख रहे हैं-

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में पृष्ठ संख्या 168 में लिखते हैं- ''जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिश्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं थी और इंग्लैंड के कोलम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जब तक नहीं गये थे तब तक वे भी करोड़ों वर्षो से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे।''

हम आपको यहां दो बातें बताना चाहते हैं कि विकास जब तक मनुष्यों का नहीं होगा तब तक राष्ट्र विकसित नहीं माना जा सकता। दूसरी बात यह है कि मनुष्यों का विकास वेद, दर्शन शास्त्र और उपनिषदों की शिक्षा से ही हो सकता है। दूसरी पुस्तकों की शिक्षा से आज का मानव संसार में अपराध ही केवल नहीं कर रहा बल्कि अपना यह जन्म और अगला जन्म दोनों बर्बाद कर रहा है।

अब प्रमाण सहित वेदों की शिक्षा की एक झांकी देखिए-

1. दूसरों का अधिकार मत छीनो (यजु. अ. 40 मंत्र 1)

2. दूसरे की कमाई पर अपना अधिकार न करो (ऋ. 2,26,9) मण्डल सूक्त मंत्र,

3. दूसरों के किसी भी सामान पर कब्जा मत कर (ऋ. 7, 47)

4. हृदय से ईर्ष्या, द्वेष और जलन निकाल दो। यह पतन की ओर ले जाते हैं। किसी की निन्दा (चुगली) मत करो।(अथर्व.कां. 6, सू. 18 मंत्र 3)

5. किसी के साथ चालाकी और धोखा मत करो (ऋ.मं. 7, सू.94, मंत्र 3)

6. जो दूसरों की जीविका नष्ट करते हैं, दूसरों का घर उजाड़ते हैं, पति-पत्नी में झगड़ा करवाते हैं और मित्रों में फूट डालते हैं वे निश्चित नरक में जाते हैं। जुआ मत खेलो और नशा मत करो। (ऋ. मण्डल 8, सूक्त 18, मंत्र 13)

7. उपकारी गाय को मत मारो (यजु. अ. 13, मंत्र 49)

8. बहिन-बहिन में, भाई-भाई में तथा बहिन-भाई में झगड़ा मत करो (अथर्व. कांड 3 सू. 30, मंत्र 3)

9. हम अपने दादा, पिता, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, दादी, माता, पुत्र-पुत्री, पोता-पोती और अपने सभी प्रिय जनों का सत्कार करें। बड़ों की अवहेलना न करें और छोटों की उपेक्षा न करें (अथर्व. मण्डल 9, सूक्त 50, मंत्र 30)

> *हम आपको यहां दो बातें बताना चाहते हैं कि विकास जब तक मनुष्यों का नहीं होगा तब तक राष्ट्र विकसित नहीं माना जा सकता। दूसरी बात यह है कि मनुष्यों का विकास वेद, दर्शन शास्त्र और उपनिषदों की शिक्षा से ही हो सकता है। दूसरी पुस्तकों की शिक्षा से आज का मानव संसार में अपराध ही केवल नहीं कर रहा बल्कि अपना यह जन्म और अगला जन्म दोनों बर्बाद कर रहा है।*
>
> *सामवेद के मंत्र 397 में कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक विकास है। माता, पिता, गुरु, उपदेशक और वयोवृद्ध बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें स्वयं अपने अन्दर वे गुण प्राप्त करने चाहिएं ताकि समाज पर उनकी शिक्षा का असर हो।*

राष्ट्र के सभी मनुष्यों में जब तक मानवता नहीं आएगी तब तक विकास नहीं कहला सकता। संसार के आठ देशों को विकसित माना जाता है किन्तु अपराध वहां भी बढ़ रहे हैं और समलैंगिकता को बढ़ावा दे रहे हैं। इसे विकास कैसे माना जा सकता है? इसको तो यूं समझिए कि मन के लड्डू फीके क्यों?

अब हम आपको एक व्यक्ति के विकास की कसौटी बतलाते हैं।

1. प्रत्येक नागरिक का शरीर स्वस्थ हो,

2. प्रत्येक व्यक्ति के पास विद्या हो,

3. प्रत्येक के पास जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त धन हो,

4. प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र ठीक हों

5. प्रत्येक देश के नागरिक का मन शांत हो।

ये पांच बातें जिसके पास होंगी वह विकसित है। जो एक के लिए आवश्यक है वही दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें यानी देश के पूरे समाज और राष्ट्र के सभी नागरिकों के लिए आवश्यक है। मानव मात्र की एक ही प्रकार की कसौटी है।

आप भाषाएं बेशक सभी देशों की सीखें और वेश-भूषा कोई भी अपनाएं किन्तु भोजन सात्विक करें तब आप अपना और देश का विकास करने में समर्थ हो सकते हैं। सात्विक भोजन क्या है? उत्तर हर प्रकार का अन्न, दालें, फल, सब्जियां, मेवे, घी, दूध, दही-मट्ठा आदि से बना ताजा भोजन जिसमें नमक-मिर्च कम मात्रा में हों वह सात्विक भोजन है। मादक पदार्थो का सेवन और मांस,मछली तथा अण्डा से बचें, ये जीवन को नरक बनाते हैं। प्रत्येक नागरिक अपने देश का विकास कर सकता है। जिस व्यक्ति ने अपना विकास कर लिया तो देश के कुछ हिस्से का विकास तो उसने कर दिया।

सामवेद के मंत्र 397 में कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक विकास है। माता, पिता, गुरु, उपदेशक और वयोवृद्ध बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें स्वयं अपने अन्दर वे गुण प्राप्त करने चाहिएं ताकि समाज पर उनकी शिक्षा का असर हो। जैसे आयुर्वेद की इस प्रकार की शिक्षा बालकों को दें कि शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए शरीर के तीन उप स्तम्भ हैं उचित भोजन, उचित निद्रा और उचित ब्रह्मचर्य की रक्षा। इनके विषय में विस्तार से बताएं। इससे उनके शरीर का विकास होगा। आत्मा के विकास के लिए महर्षि दयानन्द की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में मुक्ति के चार साधन बताएं हैं, उनके विषय में उन्हें बताएं। उसी समुल्लास में चार प्रकार की अविद्या, छुड़ाकर उन्हें विद्या की प्राप्ति कराने से उनमें आत्म शक्ति आयेगी। बुद्धि के विकास के लिए उन्हें वेदों का उत्तम ज्ञान प्राप्त कराएं।

कभी-कभी मनुष्य जीवन में ऐसे अवसर आते हैं कि यदि शारीरिक बल है तो व्यक्ति अपना काम बना लेते हैं। महाभारत के भयंकर युद्ध में चक्रव्यूह की लड़ाई में द्रोण के रक्षक होते हुएभी अभिमन्यु चक्रव्यूह में प्रवेश कर गया। यहां सफलता शरीरिक बल और युद्ध कौशल को मिली। किसी अवसर पर शारीरिक बल असफल हो जाता है।

वनवास के समय पर्वत पर घूमते हुए युधिष्ठिर को प्यास लगी तो सहदेव से कहा भाई वृक्ष पर चढ़कर देखो कहीं जलाशय दिखाई देता हो तो तुणीर में पानी भर कर लाओ। बहुत देर तक सहदेव नहीं आया तब उसी दिशा में नकुल को भेजा, वह भी नहीं आया तब अर्जुन को भेजा वह भी नहीं लौटा, तब भीम को भेजा और वह भी नहीं आया तब द्रोपदी और युधिष्ठिर दोनों गये। वहां जलाशय के मालिक के प्रश्नों का उत्तर दिया और अपने चारों भाइयों की मूर्छा दूर करवा कर और पानी पीकर आए। यहां सफलता बुद्धि बल की है शारीरिक बल की नहीं।

शारीरिक बल और बुद्धि बल से अधिक महत्त्व पूर्ण है आत्मिक बल। इसके प्रतीक हैं योगिराज कृष्ण। पाण्डवों की सफलता का श्रेय योगिराज कृष्ण को है। उन्होंने अविचल रह कर पाण्डवों का मार्ग-दर्शन किया, जरासंध का संहार, राजसूर्य यज्ञ की सफलता, युद्ध में भीष्म, कर्ण और जयद्रथ का वध। दुर्योधन पर प्रहार करने के कारण युद्ध के नियमों के विपरीत भीम को मारने के लिए उद्यत बलराम को समझाना। ये बस कृष्ण के चमत्कारपूर्ण कार्य आत्मिक बल के कारण ही हो सके। आत्मिक बल मनुष्य में ईश्वर के साथ योग होने से यानी ईश्वर भक्ति से आत्मबल बढ़ता है।

देश की पुस्तकों में ये वेदों की शिक्षाएं पूरे राष्ट्र के विद्यालयों में पढ़ाई जायेंगी। तब सभी बुद्धिमान होकर राष्ट्र को उन्नत करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु से शिक्षा लेने के 10 साल बाद विचार किया कि भारत पहले वेद धर्म के अनुसार चल कर बहुत समृद्धशाली बन गया था। अब देशवासी इस वेद धर्म को छोड़ चुके हैं और गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है यह राष्ट्र। तब उन्होंने वेद प्रचार अंतिम 10 वर्ष किया और देश को जगाया और आर्य समाज की स्थापना की।

अब आर्य समाज ही ऋषि के कार्यो को आगे बढ़ा रहा है। संसार भर के सभी देशों में आर्य समाजें स्थापित हो गई हैं और वेद प्रचार हो रहा है।

अत: देशवासियों से अपील है कि दयानन्द सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धांतों को भली-भांति जाने व समझें।

-सत्यवीर आर्य

नोट

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताएं सम्पन्न

आशु भाषण प्रतियोगिता

''आर्य विद्यालयों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य बच्चों को नैतिक शिक्षा व उत्तम संस्कार देना रहा है। इन आर्य विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं से बच्चों को लाभ मिल रहा है।'' ऑफ स्कूल के प्रबंधक श्री गोविन्द राम अग्रवाल ने उक्त विचार रखे। तीन वर्गों में विभाजित इस प्रतियोगिता में बच्चों ने मात्र 5 मिनट पहले दिये गये विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। बच्चों ने आशु भाषण के माध्यम से अपनी कल्पना शैली, वाक पटुता एवं ज्ञान का परिचय दिया। सभी विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया और अन्य प्रतियोगियों को भी प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर श्री बलदेव आर्य, श्री निरंजन सचदेवा, वीना आर्य, उमा शशि दुर्गा व विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं और बच्चे उपस्थित थे।

अपनी प्रतिभाओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से निखारने का अवसर विद्यार्थियों को मिल रहा है। आर्य विद्या परिषद् द्वारा आयोजित दिनांक 12 अगस्त 2015 को दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर में आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता के अवसर पर उपस्थित एम.डी.एच. ग्रुप

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत दिनांक 27 अगस्त 2015 नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन लालीबाई बाल विद्यालय आर्यसमाज, गोविंद भवन, दयानन्द वाटिका, नई दिल्ली-07 में आयोजित होगी। सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। **-आर्य विद्या परिषद**

भाषण प्रतियोगिता

मोतियों की चमक है आज इस धरा की धूल में, सुगन्ध भरी हुई है यहां के वातावरण में।
जीवन जिनका ढलता है नैतिकता के उसूल में, श्रद्धा से नतमस्तक हूं, आज यहां आर्य प्रतिभाओं के सामने।

ये पंक्तियां आशु कवि श्री विजय गुप्त ने आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्विद्यालयीय भाषण प्रतियोगिता में 'जैसा अन्न वैसा मन', 'हमारे जीवन में संस्कारों का महत्त्व' और 'शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता' विषयों पर आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों के विचार सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की।

रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल आर्य समाज सरोजनी नगर, दिल्ली में आयोजित इस प्रतियोगिता में श्री मनोहर लाल गुप्ता, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री मल्होत्रा जी, श्रीमती सविता महाजन, विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं व बच्चे उपस्थित थे। श्री मनोहर लाल गुप्ता जी ने इन प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य विद्या परिषद् के अधिकारियों ने प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि 'इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा को आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त मंच मिल रहा है। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन निरन्तर किया जाना चाहिए।' सभी प्रतियोगी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व विचार टी.वी. द्वारा क्रांतिकारियों के जीवन पर तैयार की गई सी.डी. भेंट की गई। वर्गानुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार दिये गये।

-आर्य विद्या परिषद

आर्य समाज हनुमान रोड, दिल्ली के तत्त्वावधान में वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज हनुमान रोड दिनांक 29 अगस्त से 5 सितम्बर 2015 तक श्रावणी पूर्णिमा रक्षा बन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार समारोह का आयोजन कर रहा है। जिसके अन्तर्गत आचार्य हरि प्रसाद जी वेद प्रवचन करेंगे।

आर्य समाज की दृष्टि में योगीराज श्री कृष्ण विषय पर भाषा प्रतियोगिता 5 सितम्बर 2015 प्रात: 10:30 बजे होगी।

निवेदक : कर्नल आर.के. वर्मा, प्रधान; श्री दयानन्द यादव, मंत्री; दूरभाष : 23361280

आर्य समाज पंखा रोड, दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज पंखा रोड, सी ब्लाक, नई दिल्ली दिनांक 29 अगस्त से 6 सितम्बर 2015 तक श्रावण पूर्णिमा रक्षाबन्धन से भाद्रपद कृष्णाष्टमी तक श्रावणी/वेद प्रचार पर्व का आयोजन कर रहा है। जिसके अन्तर्गत डॉ. जयेन्द्र कुमार आर्य व डॉ. विनय विद्यालंकार वेद प्रवचन करेंगे व भजन पं. सुमित्र देव आर्य अपनी सुमधुर वाणी द्वारा सुनाएंगे।

विनीत : श्री शिव कुमार मदान, प्रधान, मो. 9310474979; श्री अजय तनेजा, मंत्री, मो. 09811129892

महिला समाज

श्रीमती कृष्णा आहूजा, प्रधाना, दूरभाष: 25532217; श्रीमती निर्मला मोहिन्द्रा, मंत्री, दूरभाष : 25552200

पृष्ठ 1 का शेष

अमर शहीद करतार ...

बेटी भावना सहित अनेक बच्चों ने पूरे जोश के साथ देश भक्ति के रंगों को नाट्य व नृत्य शैली में व्यक्त किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री ने वीर रस का गीत 'जो अड़ गये फांसी के तख्ते पर वो चढ़ गये' गाकर उपस्थित जन समूह में एक नई चेतना जागृत कर दी। वहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने दो पंक्तियां कहकर ही वातावरण में वीर रस घोल दिया। महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में उपस्थित जनों से आग्रह पूर्वक संकल्प कराया कि 1. सभी लोग एक-दूसरे को फेस-बुक, व्हाट्सएप्प या एस. एम.एस. के माध्यम से स्वाधीनता दिवस की बधाई किसी संदेश के साथ अवश्य भेजें। 2.किसी एक शहीद की पुस्तक अपने बच्चों को दें। 3. अपने-अपने घरों पर एक राष्ट्रीय ध्वज जरूर लगाएं, 4. किसी न किसी ध्वजा रोहण कार्यक्रम में सपरिवार जरूर सम्मिलित हों।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कीर्ति शर्मा ने की। मंच संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री व कार्यक्रम आयोजन समिति के सह संयोजक श्री एस.पी. सिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य व श्री शिव कुमार मदान, आर्य समाज मॉडल बस्ती प्रधान श्री अमर नाथ गोगिया, मंत्री श्री आदर्श कुमार, आर्य समाज पुल बंगश प्रधान श्री अखिलेश भारती, आर्य समाज डोरी वालान प्रधान श्री वागीश शर्मा, आर्य केन्द्रीय सभा उप प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मंत्री श्री सुखबीर सिंह, आर्य केन्द्रीय सभा उपप्रधान श्री उषा किरण, आर्य समाज केशवपुरम मंत्री श्री मनवीर सिंह राणा व प्रधान श्री सत्यवीर पसरीचा, आर्य समाज शक्ति विहार मंत्री श्री अरुण आर्य, आर्य समाज मॉडल टाउन के श्री किशन चन्द आर्य, आर्य समाज जनकपुरी सी-3 ब्लॉक के पूर्व प्रधान श्री रमेशचन्द्र आर्य व आर्य समाज जनकपुरी सी-3 ब्लॉक के मंत्री श्री अजय तनेजा, आर्यवीर दल पूर्व प्रमुख श्री वीरेन्द्र आर्य, आर्य समाज औचन्दी के मंत्री श्री महेन्द्र सिंह, आर्य समाज जी.टी. बी. नगर के डॉ. सत्यकाम विद्यालंकार, आर्य केन्द्रीय सभा उपप्रधान श्री राजेन्द्र दुर्गा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मंत्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, आर्य समाज विवेक विहार प्रधान श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना, आर्य समाज नांगलराया के प्रधान श्री भगवान दास, डॉ. कर्ण देव शास्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य, श्री योगेश आर्य मंत्री पंजाबी बाग (पश्चिम), आर्यसमाज डी.सी.एम. कॉलोनी श्री चन्द्र मोहन आर्य। आर्य समाज नया बांस के श्री सहदेव शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के श्री दिनेश शास्त्री, आर्य समाज करोल बाग, आर्य समाज प्रताप नगर, आर्य समाज गुरुकुल रानी बाग, दयानन्द सेवा संघ, आर्य समाज तिहाड़, गुरुकुल तिहाड़, आर्य समाज सैनिक विहार, आर्य समाज आर्य समाज सागरपुर, आर्य समाज विकासपुरी, बाहरी रिंग रोड, आर्य समाज जहांगीरपुरी, आर्य समाज हनुमान रोड इत्यादि के अधिकारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिडनी, आस्ट्रेलिया 2015

दिनांक 27, 28 व 29 नवम्बर 2015

आस्ट्रेलिया आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए, यात्रा विवरण

आर्यजन इस अवसर पर आस्ट्रेलिया के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करना चाहेंगे, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आस्ट्रेलिया के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1.

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन यात्रा (6 रात्रि 7 दिन)

दिनांक 24 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24.11.2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये
वापसी : दिनांक 1.12.2015 भारत के लिए वापसी सुबह 9:45 बजे सिडनी से।

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28 तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर 2015	भारत के लिये वापसी	

यात्रा नं. 2

आस्ट्रेलिया यात्रा (12 रात्रि 13 दिन) ● 24 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24.11.2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये
वापसी : दिनांक 7.12.2015 भारत के लिये वापसी सुबह 09:45 बजे मैलबर्न से।

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर से 04 दिसम्बर तक	गोल्ड कोस्ट भ्रमण	(4 रात्रि)
05 दिसम्बर से 06 दिसम्बर तक	मैलबर्न भ्रमण	(2 रात्रि)
07 दिसम्बर 2015 को	भारत के लिए वापसी	

आवेदन पत्र हमारी बेवसाइट

www.thearyasamaj.org/download से डाउनलोड करें। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित है।

नोट:- आर्यजनों के आग्रह पर न्यूजीलैंड को जोड़कर यात्रा नं. 3 का कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है।

आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक, मो. 09824072509

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 के तत्त्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 के तत्त्वावधान में दिनांक 31 से 6 सितम्बर 2015 तक वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि डॉ. राम प्रकाश (पूर्व सांसद) होंगे।

निवेदक : श्री विजय लखनपाल, प्रधान; श्री राजेन्द्र वर्मा, मंत्री; दूरभाष : 29240762, 46678389

आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्त्वावधान में साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न

धर्म प्रचार व अध्यात्म की प्रगति की ओर अग्रसर आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्त्वावधान में साप्ताहिक सत्संग में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने ओजस्वी व्याख्यान से समस्त श्रोताओं को भारी वर्षा होने के बावजूद भी बांधे रखा। श्री धर्म पाल जी का वक्तव्य ईश्वर, जीव व प्रकृति के सिद्धांतों पर आधारित था।श्री धर्मपाल जी ने श्रोताओं को वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए कहा- ''चमन उजड़ जायेगा, अगर सारे कांटे निकाल दोगे, गुलिस्तां की जो खैर चाहो, तो चंद कांटे कबूल कर लो।''

कार्यक्रम के अन्त में सभा प्रधान श्री वेद प्रकाश जी ने श्री धर्मपाल जी आर्य का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए सारगर्भित व्याख्यान के लिए आभार प्रकट किया।

- सूर्य कान्त मिश्रा, प्रचार मंत्री

पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा!

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा लिखित पुस्तिका 'पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा' की द्वितीय किश्त में आपने मूर्तियों द्वारा दुग्ध पान के वैज्ञानिक तथ्य व फलित ज्योतिष पर श्री रैली जी के विचार जाने। आइये आगे और पढ़ें .... -सम्पादक... **-सम्पादक**

गतांक से आगे **तांत्रिकों का खौफ - हमारा भ्रम :** आज इस आधुनिक युग में वर्तमान की भाग दौड़ में मनुष्य इतनी उन्नति और विकास के बावजूद अपने डर और वहम पर काबू नहीं पा सका है। अपनी मानसिक कमजोरी को दूर करने की बजाय तांत्रिकों के भ्रमजाल मे फँस रहा है। उसके इस भ्रमजाल में फँसने का सबसे बड़ा कारण हमारा इन तांत्रिकों पर, इन तांत्रिकों की शक्तियों पर अन्धविश्वास हैं अर्थात् हम बिना कुछ सोचे समझे इस तांत्रिक विद्या पर गहरा विश्वास करते है और ये समझ बैठते हैं कि इन तांत्रिकों के पास काला जादू है, बड़ी-बड़ी दैवीय शक्तियाँ होती हैं और उनका भय हमारे भीतर होता है।

प्राचीन समय में जब तक विज्ञान का विकास नहीं हुआ था तब तक सभी प्राकृतिक आपदाओं, कर्म-अकर्म के फल, रोग, गरीबी, दु:ख इत्यादि को परमात्मा या शैतान के प्रकोप का रूप माना जाता था। सूक्ष्म तरंगों के विज्ञान एवं आंतरिक शक्तियों को जानने वाले पंडित ज्योतिषी, ब्राह्मण वर्ग, तांत्रिक एवं साधु-महात्मा जैसे लोगों ने मानव की इस अज्ञानता एवं भय का खूब लाभ उठाया। उनके इस भय को स्थाई बनाने के लिए चालाक, शिक्षित, विद्वान वर्ग ने ऐसी-ऐसी पौराणिक कहानियाँ तथा कथाएँ बना दी, जिससे सीधा-सादा मानव ईश्वरीय प्रकोप, शैतान, तंत्र की शक्तियों का भय हमेशा अपने मन में बैठाए रखें। इसमें वे खूब सफल रहे। विडम्बना तो ये है कि विज्ञान के भरपूर विकास के बावजूद भी मानव मस्तिष्क आज भी आदिवासियों की तरह ईश्वरीय प्रकोप, तांत्रिक शक्तियों, ग्रहों के प्रभाव जैसी चीजों से डरा हुआ है। मानव खान-पान या रहन-सहन से भले ही आधुनिक हो चुका हो परन्तु मस्तिष्क तो वही पुराना आदिवासी है, उसमें कोई अंतर नहीं आया । आज भी 90 प्रतिशत लोग तथाकथित पंडित, पादरी, मौलवी, ज्योतिषी, साधु-संतों एवं तांत्रिकों के चंगुल में फँसे हुए है। आज भी हरेक के दिमाग में यही दृढ विश्वास है कि सारी अद्‌भुत शक्तियाँ केवल इन्हीं लोगों के पास हैं। ये लोग कुछ भी कर सकते हैं, ये लोग ईश्वर के या शैतान के एजेन्ट हैं। ये जैसा चाहे काम ईश्वर से या शैतान से करवा सकते हैं। ईश्वर और शैतान इनकी मुट्‌ठी में होते हैं। ये जैसे चाहे उन्हें नचा सकते है। बस जरूरत है तो मुँह मांगी रकम देने की । जबकि सत्य यह है कि 10 मिनट बाद उनके साथ क्या होने वाला है वे स्वयं नहीं जानते । ऐसे ज्योतिष, बाबा या तांत्रिक आपके भय का, आपकी कमजोर मानसिकता का लाभ जरूर उठाते हैं और शिक्षित कहे जाने वाले वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील प्रोफेसर, एम.बी.ए., मिनिस्टर, आई.ए.एस. उन पर आँख मूंद कर आदिवासियों की तरह नि:सन्देह विश्वास कर लेते है।

अन्धविश्वास की पराकाष्ठा : तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक, ओपरा-पराया, श्री यंत्र, धन-लक्ष्मी यंत्र, गंडे-ताबीज, काले धागे, पैण्डुलम, नजर रक्षा कवच आदि हमारे सुरक्षा कवच या अंधविश्वास की पराकाष्ठा?आज टी.वी. चैनलों व विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने फिल्मी कलाकारों व पाखण्डी बाबाओं द्वारा विज्ञापनों के माध्यम से दु:ख दर्द से पीड़ित भोली भाली जनता को मजबूरन अन्धविश्वास की ओर धकेलने के लिए विभिन्न प्रकार के भय निवारण एवं दु:ख निवारण तथा धन की अथाह वर्षा करने वाले श्री धन-लक्ष्मी यंत्र आदि का प्रचार धुआँ-धार व धड़ल्ले से बेरोकटोक किया जा रहा है। इसके साथ-साथ 100 प्रतिशत लाभ की गारन्टी देते हैं और लाभ न होने पर 1 साल बाद पूरी राशि वापिस करने के दावे भी किए जाते हैं। इस प्रकार का ऑफर भी केवल मात्र कम कीमत पर । आप में से बहुतों ने खरीदे भी होंगे । बताइए क्या वास्तविकता यही है? खरीदने वाले आप जैसे बहुत से लोग स्पष्टीकरण देकर अपने जैसे दु:खी व पीड़ित लोगों को लूटने से बचा सकते हैं।

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै:- अर्थात् उद्यम पुरूषार्थ अथवा परिश्रम के द्वारा ही सभी कार्यो की सिद्धि होती है। केवल मनोरथ (कल्पना) करने से नहीं होती। आज के इस आधुनिक और वैज्ञानिक युग में मनुष्य ज्यों-ज्यों तरक्की कर रहा है त्यों-त्यों असुरक्षा का भाव उसके मन में घर करता जा रहा है। समाज में रहते हुए मनुष्य अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ सुरक्षा पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह पारिवारिक हो या व्यक्तिगत, व्यावसायिक हो या शारीरिक या आर्थिक कोई भी क्षेत्र हो, सभी क्षेत्रों में सुरक्षा चाहता है। असुरक्षा की यह भावना उसके मन में भय के कारण होती है और भय का कारण होता है मन का कमजोर होना । अपनी इस मानसिक कमजोरी के शिकार न केवल अनपढ़ वर्ग बल्कि शिक्षित वर्ग की एक बड़ी संख्या भी हो रही है। खासतौर पर महिला वर्ग इस कमजोरी की चपेट में आ रहा है। यह एक विडम्बना ही है कि शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं नई-नई वैज्ञानिक खोजों के बाद भी जन सामान्य भूत-प्रेत आदि पर विश्वास रखते हैं और तंत्र-मंत्र आदि के चक्कर में पड़कर अपने धन का अपव्यय व समय नष्ट करते हैं, जबकि शास्त्रीय या वैज्ञानिक किसी भी रूप में इनका अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकता । विज्ञान ने कितनी प्रगति की है, प्रतिदिन नित्य नए शोध के आधार पर विज्ञान की अनेक शाखाएं बन रही हैं। जिनेटिक इंजीनियर से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक कितना कुछ खोजा जा चुका है फिर भी आम आदमी का चिंतन, सोच बाबा आदम के जमाने से चली आ रही दकियानूसी परम्पराओं पर आधारित है। इतनी उन्नति के बावजूद मन अभी भी हजारों साल पुराना है। बरसों से पनप रहे अधंविश्वास से निकलने की बजाय उसमें फँसता जा रहा है।

सोचिए क्या ये पाखण्डी आपको धोखा देकर आपकी भावनाओं को आहत नहीं कर रहे? क्या तंत्र मंत्र आदि का सहारा लेना उचित है? गण्डे-ताबीजों के सहारे दु:ख निवारण करना, श्री यंत्र या धन-लक्ष्मी यंत्र के माध्यम से धन की आशा करना, हनुमान कवच या नजर रक्षा कवच इत्यादि का सहारा लेकर ये समझना कि हम पूर्ण रूपेण सुरक्षित हैं। ये मिथ्या और भ्रमित करने वाली बातें हैं क्या इन चीजों को अप्रत्यक्ष रूप से बेचने वाले टी.वी. पर दिनों-दिन नए-नए चेहरे नजर नहीं आ रहे हैं? क्या ये अंधविश्वास हमें कायर और डरपोक नहीं बना रहा है? आज अंधश्रद्धा और अंधविश्वास की जड़ों को समाप्त करने की बजाए हम इनकी जडों में पानी देते नजर आते हैं यथा-बिल्ली रास्ता काट जाए तो यात्रा स्थगित कर घर को लौट आते हैं, कोई छींक दे तो अपशकुन मान लेते हैं, अर्थी देखकर समझते हैं कि काम अवश्य बिगड़ेगा, बच्चों को काले टीके लगाते हैं कि नजर न लगे, वाहनों के पीछे टूटे जूते लटकाते हैं कि दुर्घटना से बचे रहें, मनीप्लांट चुराते हैं कि घर में धन की वर्षा हो, घर के द्वार या दुकानों पर नीबू मिर्ची लटकाना, काले घोड़े की नाल लगाना, बेटी या बहिन का विवाह जल्दी हो जाए इस आशा से काले घोड़े की नाल की बनी अंगूठी पहनाना, ये सब हमारा अंधविश्वास ही तो है और जब इनसे भी बात बनती नजर नहीं आती, कोई अनहोनी घटना हो जाती है तो लोग पीर फकीरों का, ओझा, बाबाओं को, ज्योतिषियों को अपना भगवान मान बैठते हैं। ऐसा आज से नहीं एक लम्बे अरसे से हो रहा है। जब समुचित शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का अभाव था तब से हमारे इस भयग्रस्त मन का फायदा इन तथाकथित गुरूओं, ओझा, बाबाओं, पीर फकीरों एवं फलित ज्योतिषविदों ने उठाया है और अपना धंधा धड़ल्ले से चलाते आ रहे हैं। हमें इस पर सोचना चाहिए आखिर कब तक हम इन 'मुखौटा पहने लुटेरों' से स्वयं एवं अपनी आने वाली (भावी) पीढ़ियों को लुटवाते रहेंगे? आखिर कब तक इन व्यापारियों व स्वयं भू अवतारों (गुरूओं) के जाल से घिरे रहेंगे?

धन लोलुप ये दूत धार्मिक संदेशों की आड़ में लोगों को ठगते हैं। एक कहावत है चाह को राह मिलती है। आज आप खड़े हो जाओ, इस तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, टोना-टोटका, जादू आदि का प्रदर्शन धर्म और ईश्वर के नाम पर करने वालों के खिलाफ। आपको स्वत: ही इन्हें निराधार साबित करने वाले प्रमाण मिलते चले जाएंगें। कोई भी चमत्कार केवल तभी तक चमत्कार होता है जब तक उसकी वैज्ञानिक व्याख्या न हो जाए और जब तक जनता जागृत या सचेत न हो । अंधविश्वास में डूबी रहे और जब समाज को ऐसे लुटेरों से बचाने वाले ठान लेते है कि उन्हें इनका पर्दाफाश करना है, लागों को अंधविश्वास और अंधविश्वास के इस गहन अज्ञान ने निकाल बाहर करना है तो फिर चाहे सत्य सांई बाबा हो या हर समस्या का हल चुटकी भर भभूत से कर देने वाले पाखण्डी सब की पोल खुल जाती है। फिर भी ''आँख के अंधे गाँठ के पूरे'' कुछ लोग अपने धन को (अपनी गाढ़ी कमाई के एक बड़े हिस्से को) इन पर लुटाते रहते हैं। इसी अंधविश्वास के कारण भारत (आर्यावर्त्त) में श्री यंत्र, नजर रक्षा कवच, धन लक्ष्मी यंत्र, नाना प्रकार के रत्नों से जड़ी अंगूठियाँ एवं गण्डे-ताबीज बेचने वालों का धंधा आसानी से फल-फूल रहा है जो लोगों को भय दिखाकर अपना पेट पालते हैं। भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार और कई ऐसी बातें हैं जो इन तंत्र मंत्रों को बढ़ावा देते हैं। आज लगभग हर जगह देखने को मिलता है कि लोग हाथों में, पैरों में, गले में काले, लाल, पीले धागे बाँधे रहते हैं। बड़े-बड़े पढ़े लिखे व्यापारी, गरीब-अमीर सबको ऐसा करते देखा जा सकता है। यही पतन का कारण है। धागा बाँध कर यदि काई कार्य होता तो सारे तंत्र मंत्र पढ़कर धागा देने वाले अमीर हो जाते, यदि इन अंगूठियों के सहारे जीवन के कष्ट दूर होते तो शायद कोई भी चोर-उच्चका या रेपिस्ट इत्यादि अंगूठियाँ पहन कर पाप करते और उस पापकर्म से पकड़े जाने पर होने वाले कष्ट से बच जाते। यदि श्री यंत्र और धन लक्ष्मी आदि यंत्रों को अपने ऑफिस में लटकाने से धन की वर्षा होती तो इन यत्रों को बेचने वाले संसार के सबसे प्रसिद्ध, सबसे धनी व्यक्ति होते और नजर रक्षा कवच, लॉकेट, गंडे ताबीज आदि पहन कर यदि किसी की बुरी नजर से बचा जा सकता तो सरकार द्वारा भारत के प्रसिद्ध स्थलों पर ये नजर रक्षा कवच या काली हांडी आदि क्यों नहीं लटकाए जाते। अत: आप इस धोखे से बचे। **क्रमश: -सुरेन्द्र कुमार रैली**

राष्ट्रध्वज का अपमान, कब तक सहेगा हिन्दुस्तान

...15 अगस्त को जब देश के सैनिक ध्वज की रक्षा के लिये सीमा पर दुश्मनों से लड़ रहे थे उसी समय उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में अफरोज अंसारी नाम के युवक ने तिरंगे को जमीन पर गिराकर उसके ऊपर पाकिस्तान का ध्वज फहराकर अपमान किया तो वहीं फतेहपुर के असोथर ब्लाक के बाल विकास परियोजना कार्यालय में तिरंगें को फहराने के एक घंटे बाद कर्मचारियों ने अधिकारियों के सामने ही तिरंगे को जमीन पर फेंक दिया।....

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जहां पूरा देश राष्ट्रीय ध्वज को सम्मान दे रहा था वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी घटनायें घटी जिसने राष्ट्र को शर्मसार और लोगों को आहत कर दिया। महात्मा गांधी ने राष्ट्रध्वज को लेकर कहा था कि ये हमारे लिये अनिवार्य होगा कि हम हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिख व अन्य मतमतान्तरों को मानने वाले भारतीय जिनके लिये भारत एक घर है एक ही ध्वज को मान्यता दें और उसके लिये मर मिटें।

15 अगस्त को जब देश के सैनिक ध्वज की रक्षा के लिये सीमा पर दुश्मनों से लड़ रहे थे उसी समय उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में अफरोज अंसारी नाम के युवक ने तिरंगे को जमीन पर गिराकर उसके ऊपर पाकिस्तान का ध्वज फहराकर अपमान किया तो वहीं फतेहपुर के असोथर ब्लाक के बाल विकास परियोजना कार्यालय में तिरंगें को फहराने के एक घंटे बाद कर्मचारियों ने अधिकारियों के सामने ही तिरंगे को जमीन पर फेंक दिया। हालाकि तिरंगे का अपमान कोई नयी बात नहीं है। इससे पहले कई फिल्मी सितारे और खेल जगत से जुड़े लोग देश का गौरव माने जाने वाले तिरंगे का अपमान कर चुके हैं। लचर झंडा एक्ट की आड़ में ये लोग तिरंगे का अपमान कर सुर्खियां बटोरते हैं। इसे हम प्रचार का हथकंडा भी कह सकते हैं। कारण संविधान में राष्ट्रध्वज के अपमान को लेकर कोई ठोस कड़ा कानून नहीं है जिस कारण कोई भी राष्ट्र की इस अस्मिता के साथ खेल जाता है।

15 अगस्त को ही शाहजहांपुर जिले के एक प्राइमरी स्कूल के शिक्षक रामआसरे यादव ने आरोहण के बाद राष्ट्रीय ध्वज को जमीन पर फेंक कर जूतों से रोंद दिया, तो पंजाब के एक मंत्री ने राष्ट्रध्वज को उल्टा फहरा दिया। जिसमें तत्काल दो सिपाहियों पर कार्रवाई के आदेश दे दिया गये। पर सबसे बड़ा दुख का कारण यह है कि जिस तिरंगे झंडे के सम्मान के लिये देश के सैनिक अपने ''शीश गवां देते हैं,'' मांओं की ममता चिताओं में लपटों से घिर जाती है, सुहागन अपना सिन्दूर तक इस तिरंगे की रक्षा के लिये युद्ध के मैदान में रख देती हैं, बहिनें अपनी रक्षा के पवित्र बंधन के रखवालों को सीमा पर भेज देती हैं और उसी देश के कुछ लफगें, अपराधी किस्म के लोग जो इस राष्ट्र को अपना राष्ट्र नहीं मानते वे तिरंगे का अपमान करें तो मन आहत जरूर होता है। मेरा भारत सरकार से आग्रह है कि राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971 की धारा जिसमें तिरंगे के अपमान को लेकर अपराधी को सिर्फ तीन वर्ष की सजा का प्रावधान है, अब यदि कोई अपराधी जान बुझकर तिरंगे का अपमान करता है तो ऐसे लोगों के लिये नया कानून बनाया जाना चाहिये जिसमें आजीवन कारावास या फांसी का प्रावधान हो। आखिर तिरंगे का यह अपमान हिन्दुस्तान कब तक सहेगा!

-राजीव चौधरी

प्रभु की प्रत्येक कृति पूर्ण है, उसमें किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं

पिता जी ने मुझे कहा पुत्र। तुमने प्यास बुझाने के लिए क्या किया? मैंने उन्हें नारियल पानी पीने की बात बताई तो वे एकदम बोल पड़े- ईश्वर की व्यवस्था में कमी ढूंढते हो? परम पिता परमात्मा को पता था कि तुम समुद्र दर्शन के लिए आआगे वहां तुम्हें प्यास लगेगी तभी उसने इस खारे समुद्र के निकट मीठे जल नारियल पानी की व्यवस्था कर दी। क्या तुम इन नायिल के पेड़ों को गुड़गांव में लगा सकते हो?

मेरे पूज्य स्व. श्री राम चन्द्र आर्य जी की इच्छा थी कि मैं उन्हें समुद्र दर्शन कराऊं। ऐसा अवसर मिल गया कि अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में आयोजित किया गया। इस अवसर का लाभ उठाने के लिए मैं अपने पिता जी और पत्नी के साथ सम्मेलन में भाग लेने के लिए मुम्बई के लिए प्रस्थान कर गया। सम्मेलन के समापन के पश्चात् हम पिता जी को लेकर मुम्बई दर्शन के लिए निकल पड़े। पिता जी को समुद्र दर्शन कराना था अत: मैंने उन्हें समुद्र की सैर एवं समुद्र दर्शन का कार्यक्रम बनाया। अत: हमने गेट वे ऑफ इंडिया एलीफेन्टा की गुफा की यात्रा का निर्णय ले लिया।

दूसरे ही दिन गेटवे आफ इंडिया के लिए एक बड़ी सी नाव से हमने ऐलीफेन्टा की गुफाओं के लिए प्रस्थान किया। लगभग एक घंटे में वहां पहुंचा जा सकता है, यह विचार कर मैंने अपने साथ पानी रखने का औचित्य नहीं समझा। हमने सोचा कि इतने बड़े विशाल जल के भंडार पर हमें जल की कोई आवश्यकता नहीं होगी। जब हमारी नाव समुद्र के बीचों-बीच पहुंची अभी आधा घंटे की यात्रा की थी तो मुझे जोरों से प्यास लगी। इस समय पानी न ले जाने की भूल का हमें ज्ञान हुआ। मैं जानता था कि समुद्र का पानी खारा होता है परंतु चखकर कभी नहीं देखा था। प्यास की अधिकता के कारण मैंने विवश होकर एक अन्जुलि में जल भर कर ज्यों ही मुंह में डाला, एक दम मुझे उल्टी हो गई। पानी इतना खारा कि मानो एक अंजुलि में ही पांच-छ: चम्मच नमक घोल दिया गया हो। मैं सोचने लगा-प्रभु। इतना विशाल जल का भंडार परंतु मैं फिर भी प्यासा। प्रभु! तेरी व्यवस्था बड़ी विचित्र है। अन्दर से आवाज आई प्रभु की व्यवस्था में कमी ढूंढ रहे हो। बड़ी कठिनाई से उस यात्रा को पूरा करके एलीफेंटा गुफाओं तक पहुंचे। नाव से उतर कर सब से पहला कार्य मैंने नारियल का पानी पीने का किया। पिता जी समुद्र दर्शन एवं समुद्र यात्रा का आनन्द ले रहे थे। वे मेरी मन स्थिति से अपरिचित लगते हुए मेरे चेहरे के मनोभावों को पढ़ने लगे। मैंने उस को प्रभु की व्यवस्था की शिकायत कर डाली कि इतना विशाल जल का भंडार और पीने योग्य बिल्कुल नहीं। पिता जी ने मुझे कहा पुत्र। तुमने प्यास बुझाने के लिए क्या किया? मैंने उन्हें नारियल पानी पीने की बात बताई तो वे एकदम बोल पड़े- ईश्वर की व्यवस्था में कमी ढूंढते हो? परम पिता परमात्मा को पता था कि तुम समुद्र दर्शन के लिए आआगे वहां तुम्हें प्यास लगेगी तभी उसने इस खारे समुद्र के निकट मीठे जल नारियल पानी की व्यवस्था कर दी। क्या तुम इन नारियल के पेड़ों को गुड़गांव में लगा सकते हो? तुम प्रयत्न करना भी चाहो तो भी सफल नहीं होगे। पुत्र! ऐसे मीठे जल के स्रोत तो केवल समुद्र के खारे पानी के निकट ही लगाये जा सकते हैं। परम पिता परमात्मा की प्रत्येक रचना विचित्र है और पूर्ण है, उसमें कोई त्रुटि नहीं है।

बन्धुओं मैं पिता जी के तर्क से पूर्ण सन्तुष्ट हो गया कि परम पिता परमात्मा की प्रत्येक कृति पूर्ण है, उस में कोई त्रुटि नहीं है। परम पिता द्वारा ही उस परमात्मा के दर्शन उन कृतियों के माध्यम से किये जा सकते हैं तभी तो वेद में कहा है।

''पूर्णमद: पूर्णमिदस्'' वह प्रभु पूरा है और पूरे के काम ही पूरे होते है, उसमें कोई त्रुटि नहीं होती।

कन्हैया लाल आर्य,
उपप्रधान आत्म शुद्धि आभ्य, बहादुरगढ़

स्वास्थ्य चर्चा

वर्षा ऋतु में पालन करने योग्य आहार-विहार

हमारे ऋषि-मुनि व वैद्य लोग ऋतु के अनुसार पदार्थों का सेवन करने की सलाह देते थे, इसी प्रकार विहार का भी पालन किये जाने और उत्तम दिनचर्या का पालन किये जाने की सलाह देते थे। आजकल जबकि बरसात का मौसम अपने पूरे यौवन पर है तब आपको अपना आहार-विहार कैसा करना चाहिए आईए इस पर एक दृष्टि डालें-

वर्षा ऋतु के बारे में दो मुख्य बातें ध्यान रखनी चाहिए। एक बात तो यह कि वर्षा 'स्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादय:' के अनुसार ऋतु के प्रभाव से वर्षा काल में जठराग्नि मन्द हो जाती है, वायु कुपित रहती है जिससे गैस अधिक बनती है इसलिए इस ऋतु में अपनी पाचन शक्ति का पूरा ध्यान रखना चाहिए और ऐसा सादा सुपाच्य आहार लेना चाहिए जिससे गैस व कब्ज न हो। दूसरी बात साफ-सफाई रखने की है जिसमें वातावरण की शुद्धि, पानी की शुद्धता, कपड़ों और अपने शरीर की साफ सफाई रखना आदि काम शामिल है।

आहार : चूंकि वर्षाकाल में पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है अत: इस काल में हल्का व ताजा भोजन खूब अच्छी तरह चबा कर खाना चाहिए। इस काल में नई कच्ची हरी घास पैदा होती है। गाय-भैंस कच्ची घास खाती हैं इसीलिए श्रावण मास में दूध का सेवन वर्जित किया गया है। इस काल में प्रतिदिन छिलके वाली मूंग की दाल अवश्य खाना चाहिए। यह पेट को ठीक रखने का विशेष गुण रखती है। हरी शाक सब्जी को खूब अच्छी प्रकार से धो करके ही पकाना चाहिए। मौसमी फलों में जामुन, मक्के के भुट्टे और पके हुए मीठे आम का सेवन उचित मात्रा में अवश्य करना चाहिए। आम का रस निकाल कर दूध में मिलाकर अमरस बनाते हैं। यह अमरस भारी होता है अत: अधिक मात्रा में सेवन नहीं करना चाहिए। एक गिलास रस में आधा

...शेष पेज 8 पर

शोक समाचार

मा. रामपाल दहिया को पुत्र शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री मा. राम पाल दहिया के सुपुत्र श्री शिव दहिया का 35 वर्ष की अल्पायु में लम्बी बीमारी के कारण दिनांक 10 अगस्त 2015 को निधन हो गया। दिनांक 14 अगस्त को दयानन्दमठ, रोहतक में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी जिसमें हरियाणा की विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

17 अगस्त से 23 अगस्त, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20 अगस्त/ 21 अगस्त, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 अगस्त, 2015

आर्यन अभिनंदन समारोह

आर्ष गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली में दिनांक 19 सितम्बर 2015 को सभी आर्य संन्यासी, विद्वान, महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है उन सबका अभिनंदन ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा किया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती करेंगे।

योग्य पात्र सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती अध्यक्ष, आर्ष गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली एवं ठाकुर विक्रम सिंह, दूरभाष : 011-45791152/ 011-29842527

नोट : केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिये लगाया है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो।

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, हाथी खाना, राजकोट में दिनांक 15 से 23 अगस्त 2015 तक श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम सम्बन्धी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- **श्री रणजीत सिंह परमार, प्रधान, मो. 09428202594, श्री प्रवीण भाई ठाकर, मंत्री, मो. 09033031145**

चुनाव समाचार

आर्य समाज रामगली, हरी नगर (घंटाघर) नई दिल्ली

प्रधान - **श्रीमती राजेश्वरी आर्य**
मंत्री - **श्री श्रीपाल आर्य**
कोषाध्यक्ष - **हृदेश शर्मा**

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, मस्जिद मोठ, नई दिल्ली

प्रधान - **श्री रविदेव गुप्ता**
मंत्री - **श्री चतर सिंह नागर**
कोषाध्यक्ष - **ओमवीर सिंह**

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज प्रशान्त विहार दिल्ली दिनांक 19 से 23 अगस्त 2015 तक श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

श्री कृष्ण चन्द पाहूजा, प्रधान मो. 09810119345, श्री सोहन लाल मुखी, मंत्री मो. 09811849523

वधू चाहिए

हैदराबाद के हाईटेकसिटी में कार्यरत 34 वर्षीय विकलांग सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर को 24 से 28 वर्षीय कम से कम 10वीं तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त, सौम्य तथा प्रशांत प्रवृत्ति युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी, गरीब परिवार की या अनाथाश्रम में रहने वाली या कन्या गुरुकुल में पढ़ने वाली वधू चाहिए। जात-पात का कोई बन्धन नहीं गुण-कर्म-स्वभाव को ही प्राथमिकता दी जाएगी।

सम्पर्क करें - 08142772392, 09885667682

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 7 का शेष

वर्षा ऋतु में ...

चम्मच शुद्ध घी और आधा चम्मच पिसी सौंठ मिलाने से इसका वात दोष नष्ट हो जाता है। यदि 40 दिन तक सुबह शाम केवल आमचूस कर या आमरस पीकर पेट भरें तो शरीर सुडौल, हृष्ट-पुष्ट और चेहरा भरा हुआ व कान्तिपूर्ण हो जाता है। शरीर में रक्त व मांस की वृद्धि होती है।

आम और जामुन पौष्टिक और रक्तवर्द्धक मौसमी फल होते हैं। आम पका हुआ और मीठा ही खाना चाहिए क्योंकि खट्टा आम धातु को दूषित और क्षीण करता है। इसी प्रकार जामुन अच्छे बड़े आकार के और पके हुए ही खाना चाहिए। भोजन के बाद दोपहर में थोड़े जामुन, नमक लगाकर रोजाना खाने चाहिए। जामुन में सुपाच्य लौहतत्व होते हैं जो रक्त और हिमोग्लोबिन बढ़ाते हैं। रक्ताल्पता से पीड़ित व्यक्ति के लिए ये दोनों फल बहुत गुणकारी हैं।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह